पुरस्कृत्य महेश्वरम्। तं शिप्रसंघकासारं मनोज्ञं सर्व-देहिनाम्। शीतामलजलं सर्वैर्गुणैरनिशसमन्वितम्। दृष्ट्वा क्षणं हरस्तस्मिन् कौतुकाद्योऽभूदवेक्षणे। शिप्रां नाम नदीं तस्मान्निःसृतां दक्षिणोदधिम्। गच्छन्तीञ्च ददर्शासौ पावयन्तीं जगज्जनान्"। तत्रैव १९ अ०।

**शिफा** स्त्री शि-फक्। वृक्षाणां १जटाकारे मूले। (शिकड़) अमरः। २नद्यां ३मांसिकायां ४मातरि मेदि०। ५शत-पुष्पायां ६हरिद्रायां राजनि०। ७पद्मकन्दे मुकुटः। जाटाकारे मूले पु० विद्याविनोदः।

**शिफाक** पु० शिफेव इवार्थे कन्। पद्ममूले शब्दच०।

**शिफाकन्द** पु० शिफेव कन्दः। पद्ममूले अमरः।

**शिफाधर** पु० शिफा अधरा यस्मात्। शाखायां शब्दच०।

**शिफारुह** पु० शिफायां रोहति रुह-क। वटवृक्षे राजनि०

**शिमुड़ी** स्त्री (चङ्गोनि) ख्याते क्षुपभेदे राजनि०।

**शि(सि)म्बा** स्त्री शाम्यति समति वा शम-सम-वा बा० डम्बच् पृषो०। (शिमी) ख्याते १पदार्थे शब्दच०। २चक्र-मर्दे पु० शब्दच०।

**शि(म्बि)म्बी** स्त्री शम-बि नि० वा ङीप्। १शिम्बायां (शिम्) लतायां हेमच० "महापापकरी शिम्बी" ति०त० २एरकायाञ्च भावप्र०। स्वार्थे क। तत्रैव।

**शिम्बीधान्य** न० शिम्बीजातं धान्यं शा०त०। मुद्गादौ धान्यभेदे भावप्र०। [शब्दर० कप् तत्रैव।

**शिम्बीपर्णी** स्त्री शिम्बीव पर्णमस्याः ङीप्। मुद्गपर्ण्यां

**शिर** न० शॄ-क। १मस्तके जटा० "पिण्डं दद्यात् गयाशिरे" वायुपु०। २पिप्पलीमूले मेदि०। ३शय्यायाम् ४अजगरे च संक्षिप्तसा०।

**शिरःफल** पु० शिर इव फलमस्य। नारिकेले त्रिका०। [गारुड़े

**शिरःशूल** न० शिरसः शूलमिव तापकत्वात्। शूलरोगभेदे

**शिरज** पु० शिरे जायते जन-ड। केशे शब्दच०।

**शिरस्** न० शॄ-असुन् नि०। १मस्तके २शिखरे अमरः। ३प्रधाने ४सेनाग्रे मेदि०।

**शिरसिज** पु० शिरसि जायते जन ड वा अलुक् समासः। केशे जटाध०। लुकि शिरोजोऽप्यत्र। [केशे शब्दच०।

**शिरसिरुह** पु० शिरसि रोहति रुह-क वा अलुक् समा०।

**शिरस्क** न० शिरसि कायति प्रकाशते कै-क। शिरस्त्राणे हेमच०

**शिरस्त्र** न० शिरस्त्रायते त्रै-क। शिरोरक्षके उष्णीषे अमरः

**शिरस्त्राण** न० शिरस्त्रायते अनेन त्रै-करणे ल्युट्। शिरो-रक्षणे उष्णीषे हेमच०।

**शिरस्य** पु० शिरसि भवः यत्। १निर्मलकेशे अमरः २शिरो-भवमात्रे त्रि०। [अस्य दन्त्यादित्वमपीत्यन्ये।

**शिरा** स्त्री शॄ-क। नाड्यां (शिर) मेदि०। सृ-किरच् डिच्च।

**शिरापत्र** पु० शिरेव पत्रं यस्य। हिन्तालवृक्षे राजनि०।

**शिराल** न० शिरोऽस्त्यस्य लच्। १कर्मरङ्गे शब्दच०। तत्फलस्य शिरायुक्तत्वात्तथात्वम्। २शिरायुक्ते त्रि०।

**शिरालक** पु० शिरायामलति पर्य्याप्नोति अल-ण्वुल्। (छाड़बोड़ा) वृक्षभेदे शब्दच०।

**शिरावृत्त** न० शिरेव वर्त्तते वृत-क्त। सीसके राजनि०।

**शिरि** पु० शॄ-क्रि। १खड्गे २शरे ३हिंस्रे त्रि० उणादि०। ४शलभे सि०कौ०।

**शिरीष** पु० शॄ-ईषन् किच्च। स्वनामख्याते वृक्षे अमरः। "शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः। दोषशोथविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः" भावप्र०।

**शिरीषपत्रिका** स्त्री शिरीषस्येव पत्रमस्याः कप् कापि अत इत्त्वम्। श्वेतकिणिहीवृक्षे राजनि०।

**शिरोगृह** न० शिरःस्थमुपरिस्थं गृहम्। (चिलेघर) चन्द्र-शालायां हेमच०।

**शिरोग्रह** पु० "रक्तमाश्रित्य पवनः कुर्य्यात् मूर्द्धधराः शिराः। रूक्षाः सवेदनाः कृष्णाः सोऽसाध्यः स्याच्छिरोग्रहः" भावप्र० उक्ते वातरोगभेदे "मूर्द्धधरा ग्रीवागताः स पवनः शिरोग्रहः स्यादित्यन्वयः" भावप्र०। [हेमच०।

**शिरोधरा** स्त्री शिरोमस्तकं धरति धृ-अच्। ग्रीवायां

**शिरोधि** स्त्री शिरो धीयतेऽत्र धा-कि। ग्रीवायाम् अमरः

**शिरोमणि** पुंस्त्री० शिरसि धार्य्यो मणिः शा०त०। शिरोधार्य्ये रत्ने चूडामणौ शब्दच०। स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप्। शिरो-रत्नादयोऽप्यत्र न०।

**शिरोमर्म्मन्** पु० शिरसि मर्म्म यस्य। शूकरे हेमच०।

**शिरोरुजा** स्त्री शिरो रुजति व्यथयति रुज-क। १वन्ध्य-च्छदवृक्षे त्रिका०। ६त०। २मस्तकरोगे च।

**शिरोरुह** पु० शिरसि रोहति रुह-क। केशे अमरः।

**शिरोरोग** पु० ६त० सुश्रुतोक्ते मस्तकरोगभेदे तल्लक्षणं यथा "अथातः शिरोरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः। शिरो रुजति मर्त्यानां वातपित्तकफैस्त्रिभिः३। सन्निपा-तेन४ रक्तेन५ क्षयेण६ क्रिमिभि७स्तथा। सूर्य्यावर्त्तान्-न्तवाता९र्द्धावभेदक१०शङ्खकैः११। एकादशप्रकारस्य लक्षणं संप्रवक्ष्यते। यस्यानिमित्तं शिरसो रुजश्च भवन्ति तीव्रा निशि चातिमात्रम्। बन्धोपतापैश्च भवेद्विशेषः शिरो-